

# न्याय एवं शांकर वेदान्त के परिप्रेक्ष्य में प्रत्यक्ष की अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन

Dr. Bhavesh B. Kachchadiya

Assistant Professor in Philosophy, Dharmendrasinhji Arts College, Rajkot

doi.org/10.64643/IJIRTV12I8-190932-459

सारांश- भारतीय दर्शन में ज्ञानमीमांसा (Epistemology) के अंतर्गत प्रत्यक्ष को एक प्रमुख प्रमाण माना गया है। विभिन्न दर्शनों ने इसकी व्याख्या अपने-अपने दार्शनिक आधारों के अनुसार की है। प्रस्तुत अध्ययन में न्याय दर्शन एवं शांकर वेदान्त में प्रत्यक्ष की अवधारणा का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है, जिससे उनके यथार्थवादी एवं अद्वैतवादी दृष्टिकोणों का स्पष्ट भेद उभरकर सामने आता है।

न्याय दर्शन में प्रत्यक्ष को इंद्रिय और विषय के संयोग से उत्पन्न, अव्यपदेश्य, अव्यभिचारी एवं निश्चित ज्ञान माना गया है। गौतम के न्यायसूत्रों के अनुसार प्रत्यक्ष बाह्य तथा आंतरिक दोनों प्रकार का होता है। न्याय दर्शन प्रत्यक्ष को वस्तुनिष्ठ यथार्थ का विश्वसनीय साधन मानता है और इसे ज्ञान का प्राथमिक एवं स्वतंत्र प्रमाण स्वीकार करता है। यहाँ ज्ञान और ज्ञेय के बीच भेद बना रहता है। इसके विपरीत, शांकर वेदान्त में प्रत्यक्ष को व्यावहारिक स्तर (व्यवहारिक सत्य) पर स्वीकार किया गया है, परंतु पारमार्थिक स्तर पर इसे अविद्या से आच्छादित माना गया है। शंकराचार्य के अनुसार प्रत्यक्ष, अनुमान आदि सभी प्रमाण केवल ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति में सहायक हैं, किंतु स्वयं अंतिम सत्य का बोध नहीं करा सकते। प्रत्यक्ष ज्ञान द्वैत पर आधारित होने के कारण ब्रह्म की अद्वैत सत्ता को पूर्णतः प्रकट नहीं कर पाता।

तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो न्याय दर्शन प्रत्यक्ष को यथार्थ का साधन मानते हुए ज्ञान की वस्तुनिष्ठता पर बल देता है, जबकि शांकर वेदान्त प्रत्यक्ष की सीमा निर्धारित कर उसे अंतिम सत्य के संदर्भ में अपर्याप्त ठहराता है। इस प्रकार प्रत्यक्ष की अवधारणा दोनों दर्शनों में समान होते हुए भी उनके तत्त्वमीमांसीय (Ontological) और ज्ञानमीमांसीय दृष्टिकोणों के कारण भिन्न रूप में प्रतिपादित होती है।

यह अध्ययन भारतीय दर्शन की बहुआयामी ज्ञान परंपरा को समझने में सहायक सिद्ध होता है तथा यह दर्शाता है कि प्रत्यक्ष जैसे सामान्य प्रतीत होने वाले प्रमाण की व्याख्या भी दार्शनिक दृष्टिकोण के अनुसार किस प्रकार परिवर्तित हो जाती है।

## प्रस्तावना

विश्व की समस्त ज्ञान मीमांसा की विवेचना में हमें प्रत्यक्ष एक अलग ही स्थान पर दिखाई देता है। प्रत्यक्ष के खंडन या मडन किए बिना कोई भी ज्ञानमीमांसा का कार्य संभव क्योंकि इस दृश्य जगत से विरक्त होकर कोई भी दार्शनिक सिद्धांत की स्थापना नहीं हो सकती। इसीलिए सभी दार्शनिक साक्षात् या और साक्षात् रूप से इस दृश्य जगत के साथ संबंध दिखाते हैं। अनुभाविक जगत की व्याख्या करने हेतु विज्ञान एवं दर्शनशास्त्र कदापि दृश्य जगत का तिरस्कार नहीं कर सकता और

इस दृश्य जगत को सरलता हेतु समझाने का एकमात्र साधन प्रत्यक्ष है। विश्व की कोई भी प्रमाण मीमांसा में इसकी अवहेलना पाई गई नहीं है। यदि प्रमाण शास्त्र के अनुसार देखा जाए तो विश्व की सभी ज्ञान मीमांसा को तीन प्रकार में वर्गीकृत कर सकते हैं :

- (1) प्रत्यक्ष वादी प्रमाण शास्त्र
- (2) अंतः प्रज्ञवादी प्रमाण शास्त्र एवं
- (3) समन्वयवादी प्रमाण शास्त्र

समन्वयवादी दृष्टिकोण प्रथम एवं द्वितीय का संतुलित प्रयोग करते हैं इसलिए मूलतः जगत में दो ही प्रकार की ज्ञान मीमांसा देखी जाती हैं प्रत्यक्ष वादी एवं अंतर प्रज्ञवादी पाश्चात्य ज्ञान मीमांसा में प्रत्यक्षवादी ज्ञान मीमांसा का स्थान सर्वोपरि है। उसका मूलतः दो कारण दिखाया गया है एक यह सर्व प्रमाणों का आधार है और दूसरा अन्य प्रमाणों की कसौटी भी प्रत्यक्ष के आधार पर होती है।

भारतीय दर्शन में चार्वाक सहित सभी दार्शनिक प्रत्यक्ष को ज्ञान का वैध साधन मानते हैं। यह प्रमाण भी है और प्रमा भी है। भारतीय दर्शन में वेदांती मत जो व्यावहारिक जगत को अस्वीकार करते हैं वह भी व्यावहारिक ज्ञान के स्वरूप हेतु प्रत्यक्ष को स्वीकार करते हैं। चार्वाकवादी प्रत्यक्ष को ही एक मात्र वैद्य ज्ञान का साधन मानते हैं, जबकि पाश्चात्य दर्शन में देकार्त इंद्रिय प्रत्यक्ष को भ्रामक एवं संदिग्ध मानते हैं।

#### व्याख्या:

विविध भारतीय दर्शनों में प्रत्यक्ष की व्याख्या में मतेक्य नहीं है। प्रत्येक शब्द दो पदों की संधि से बना हुआ है: प्रति और अक्ष। यह प्रति का अर्थ समक्ष एवं अक्ष का अर्थ आंख लिया जाए तो प्रत्यक्ष की यह संकुचित व्याख्या होती है। जबकि व्यापक अर्थ में पक्ष का अर्थ इंद्रिय (आंख कान नाक जीभ त्वचा) लिया जाए तो यह प्रत्यक्ष की व्यापक व्याख्या हुई। भारतीय दर्शनों में

न्याय -वैशेषिक प्रत्यक्ष को यह व्याप्त व्याख्या में व्याख्यायित करते हैं।

वैशेषिक प्रत्यक्ष को न केवल इन इंद्रिय जनक ज्ञान किंतु यहां आम तौर पर मन को भी इंद्री माना गया है। इसीलिए वाह्य एवं आंतरिक प्रत्यक्ष दोनों प्रत्यक्ष के मत में आते हैं। प्रत्यक्ष की इसी परिभाषा को ध्यान में रखते हुए उसे चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।

(1) स्वलक्षण कल्प कल्पना रहित ज्ञान यह बौद्ध मत है।

(2) इंद्रिय सन्निकर्ष ज्ञान यह न्याय- वैशेषिक मत।

(3) तृतीय साक्षात् ज्ञान यह वेदांत एवं प्रभाकर मत है।

(4) साक्षात् ज्ञान जो जैन दर्शन का प्रख्यात मत है।

न्याय और शांकर वेदांत दोनों ही भारतीय दर्शन की महत्वपूर्ण शाखाएं हैं, जिनमें प्रत्यक्ष की अवधारणा का महत्वपूर्ण स्थान है। आइए, इन दोनों दर्शन शाखाओं में प्रत्यक्ष की अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन करें:

#### न्याय दर्शन में प्रत्यक्ष:

न्याय दर्शन में प्रत्यक्ष एक महत्वपूर्ण अवधारणा है, जो ज्ञान के साधनों में से एक है। न्याय के अनुसार, प्रत्यक्ष वह ज्ञान है जो इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होता है।

"इन्द्रियार्थसन्निकर्षोत्पन्नं

ज्ञानमव्यपदेश्यमव्यभिचारि व्यवसायात्मकं

प्रत्यक्षम्"

(न्यायसूत्र 1.1.4)

(इंद्रियों और अर्थ (विषय) के सन्निकर्ष (संपर्क) से उत्पन्न, अव्यपदेश्य (जिसका नाम न लिया जा सके), अव्यभिचारी (भ्रमरहित) और व्यवसायात्मक (निश्चित) ज्ञान प्रत्यक्ष है।)

न्याय दर्शन में प्रत्यक्ष के लक्षण निम्नलिखित हैं

1. इंद्रिय प्रत्यक्ष: प्रत्यक्ष ज्ञान इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होता है। न्याय के अनुसार, इंद्रियों के माध्यम से ही हमें वस्तुओं का ज्ञान होता है।
  2. व्यक्तिगत अनुभव: प्रत्यक्ष ज्ञान व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित होता है। न्याय के अनुसार, प्रत्यक्ष ज्ञान में व्यक्ति का अपना अनुभव ही महत्वपूर्ण होता है।
  3. साक्षात्कार: प्रत्यक्ष ज्ञान में वस्तु का साक्षात्कार होता है। न्याय के अनुसार, प्रत्यक्ष ज्ञान में वस्तु का प्रत्यक्ष अनुभव होता है, जिससे हमें उसके बारे में ज्ञान होता है।
  4. यथार्थ ज्ञान: प्रत्यक्ष ज्ञान यथार्थ ज्ञान होता है, जो वस्तु के वास्तविक स्वरूप को दर्शाता है। न्याय के अनुसार, प्रत्यक्ष ज्ञान में वस्तु का वास्तविक स्वरूप ही प्रकट होता है।
  5. अव्यभिचारी: प्रत्यक्ष ज्ञान अव्यभिचारी होता है, अर्थात् वह कभी भी गलत नहीं होता है। न्याय के अनुसार, प्रत्यक्ष ज्ञान में कभी भी भ्रम या त्रुटि नहीं होती है।
  6. निश्चित: प्रत्यक्ष ज्ञान निश्चित होता है, अर्थात् वह हमेशा सत्य होता है। न्याय के अनुसार, प्रत्यक्ष ज्ञान में कभी भी संशय नहीं होता है।
  7. स्वतः: प्रमाण: प्रत्यक्ष ज्ञान स्वतः: प्रमाण होता है, अर्थात् वह अपने आप में प्रमाणित होता है। न्याय के अनुसार, प्रत्यक्ष ज्ञान को किसी अन्य प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती है।
- इन लक्षणों से स्पष्ट होता है कि न्याय दर्शन में प्रत्यक्ष ज्ञान एक महत्वपूर्ण अवधारणा है, जो हमें वस्तुओं का वास्तविक ज्ञान कराता है।

न्याय दर्शन में प्रत्यक्ष के भेद निम्नलिखित हैं:

1. निर्विकल्पक प्रत्यक्ष: यह वह प्रत्यक्ष है जिसमें वस्तु का ज्ञान उसके गुणों के बिना होता है। उदाहरण के लिए, जब हम किसी वस्तु को पहली बार देखते हैं,

- तो हमें उसके गुणों का ज्ञान नहीं होता है, लेकिन हमें वस्तु का ज्ञान होता है।
2. सविकल्पक प्रत्यक्ष: यह वह प्रत्यक्ष है जिसमें वस्तु का ज्ञान उसके गुणों के साथ होता है। उदाहरण के लिए, जब हम किसी वस्तु को दूसरी बार देखते हैं, तो हमें उसके गुणों का ज्ञान होता है, जैसे कि उसका रंग, आकार, आदि।
3. लक्षण प्रत्यक्ष: यह वह प्रत्यक्ष है जिसमें वस्तु के लक्षणों का ज्ञान होता है। उदाहरण के लिए, जब हम किसी वस्तु को देखते हैं, तो हमें उसके लक्षणों का ज्ञान होता है, जैसे कि उसका आकार, रंग, आदि।
4. विशेषण प्रत्यक्ष: यह वह प्रत्यक्ष है जिसमें वस्तु के विशेषणों का ज्ञान होता है। उदाहरण के लिए, जब हम किसी वस्तु को देखते हैं, तो हमें उसके विशेषणों का ज्ञान होता है, जैसे कि वह बड़ा है, छोटा है, आदि।
5. सामान्य प्रत्यक्ष: यह वह प्रत्यक्ष है जिसमें वस्तु के सामान्य गुणों का ज्ञान होता है। उदाहरण के लिए, जब हम किसी वस्तु को देखते हैं, तो हमें उसके सामान्य गुणों का ज्ञान होता है, जैसे कि वह एक पेड़ है, आदि।
6. विशेष प्रत्यक्ष: यह वह प्रत्यक्ष है जिसमें वस्तु के विशेष गुणों का ज्ञान होता है। उदाहरण के लिए, जब हम किसी वस्तु को देखते हैं, तो हमें उसके विशेष गुणों का ज्ञान होता है, जैसे कि वह एक आम का पेड़ है, आदि।
7. अनिर्वचनीय प्रत्यक्ष: यह वह प्रत्यक्ष है जिसमें वस्तु का ज्ञान उसके नाम के बिना होता है। उदाहरण के लिए, जब हम किसी वस्तु को पहली बार देखते हैं, तो हमें उसके नाम का ज्ञान नहीं होता है, लेकिन हमें वस्तु का ज्ञान होता है।
8. निर्वचनीय प्रत्यक्ष: यह वह प्रत्यक्ष है जिसमें वस्तु का ज्ञान उसके नाम के साथ होता है। उदाहरण के लिए, जब हम किसी वस्तु को दूसरी बार देखते हैं, तो

हमें उसके नाम का जान होता है, जैसे कि वह एक आम है, आदि।

इन भेदों से स्पष्ट होता है कि न्याय दर्शन में प्रत्यक्ष के विभिन्न प्रकार होते हैं, जो वस्तु के जान के विभिन्न पहलुओं को दर्शाते हैं।

न्याय में प्रत्यक्ष का महत्व:

1. जान का साधन: प्रत्यक्ष जान का एक महत्वपूर्ण साधन है।
2. वास्तविकता का जान: प्रत्यक्ष जान हमें वास्तविकता का जान कराता है।
3. व्यावहारिक जीवन में उपयोग: प्रत्यक्ष जान व्यावहारिक जीवन में उपयोग होता है।

न्याय में प्रत्यक्ष के दोष:

1. भ्रम: प्रत्यक्ष जान में भ्रम हो सकता है।
2. विपर्यय: प्रत्यक्ष जान में विपर्यय हो सकता है।
3. संशय: प्रत्यक्ष जान में संशय हो सकता है।

इस प्रकार, न्याय दर्शन में प्रत्यक्ष एक महत्वपूर्ण अवधारणा है, जो जान के साधनों में से एक है और हमें वास्तविकता का जान कराता है।

शांकर वेदांत में प्रत्यक्ष

शांकर वेदांत में प्रत्यक्ष एक महत्वपूर्ण अवधारणा है, जो जान के साधनों में से एक है। शांकर वेदांत के अनुसार, प्रत्यक्ष वह जान है जो इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होता है, लेकिन यह जान अधूरा और अपूर्ण होता है।

शांकर वेदांत में प्रत्यक्ष के प्रकार:

1. व्यावहारिक प्रत्यक्ष: यह वह प्रत्यक्ष है जो संसार में व्यावहारिक जीवन में उपयोग होता है। यह प्रत्यक्ष

अधूरा और अपूर्ण होता है, लेकिन यह संसार में जीवन चलाने के लिए आवश्यक है।

2. पारमार्थिक प्रत्यक्ष: यह वह प्रत्यक्ष है जो ब्रह्म की वास्तविकता को समझने के लिए आवश्यक है। यह प्रत्यक्ष पूर्ण और वास्तविक होता है, और यह संसार की वास्तविकता को समझने के लिए आवश्यक है।
3. प्रातिभासिक प्रत्यक्ष: यह वह प्रत्यक्ष है जो माया के कारण होता है। यह प्रत्यक्ष अधूरा और अपूर्ण होता है, और यह संसार की वास्तविकता को समझने में भ्रम पैदा करता है।

शांकर वेदांत में प्रत्यक्ष के लक्षण:

1. अधूरा और अपूर्ण: शांकर वेदांत के अनुसार, प्रत्यक्ष अधूरा और अपूर्ण होता है, क्योंकि यह संसार की वास्तविकता को पूरी तरह से नहीं समझ पाता है।
2. माया के कारण: शांकर वेदांत के अनुसार, प्रत्यक्ष माया के कारण होता है, जो संसार की वास्तविकता को छुपाता है।
3. ब्रह्म की वास्तविकता को समझने के लिए आवश्यक: शांकर वेदांत के अनुसार, प्रत्यक्ष ब्रह्म की वास्तविकता को समझने के लिए आवश्यक है, लेकिन यह अधूरा और अपूर्ण होता है।

शांकर वेदांत में प्रत्यक्ष का महत्व:

1. संसार में जीवन चलाने के लिए आवश्यक: शांकर वेदांत के अनुसार, प्रत्यक्ष संसार में जीवन चलाने के लिए आवश्यक है, क्योंकि यह हमें संसार की वास्तविकता को समझने में मदद करता है।
2. ब्रह्म की वास्तविकता को समझने के लिए आवश्यक: शांकर वेदांत के अनुसार, प्रत्यक्ष ब्रह्म की वास्तविकता को समझने के लिए आवश्यक है, क्योंकि यह हमें ब्रह्म की वास्तविकता को समझने में मदद करता है।

इस प्रकार, शांकर वेदांत में प्रत्यक्ष एक महत्वपूर्ण अवधारणा है, जो ज्ञान के साधनों में से एक है और संसार की वास्तविकता को समझने में मदद करता है।

#### तुलनात्मक अध्ययन:

1. प्रत्यक्ष की परिभाषा: न्याय में प्रत्यक्ष की परिभाषा है "इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त ज्ञान", जबकि शांकर वेदांत में प्रत्यक्ष की परिभाषा है "इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त अधूरा और अपूर्ण ज्ञान"।
2. प्रत्यक्ष के प्रकार: न्याय में प्रत्यक्ष के दो प्रकार हैं, जबकि शांकर वेदांत में प्रत्यक्ष के तीन प्रकार हैं।
3. प्रत्यक्ष का महत्व: न्याय में प्रत्यक्ष का महत्व है ज्ञान के साधन के रूप में, जबकि शांकर वेदांत में प्रत्यक्ष का महत्व है ब्रह्म की वास्तविकता को समझने के लिए।
4. प्रत्यक्ष की सीमाएँ: न्याय में प्रत्यक्ष की सीमाएँ नहीं हैं, जबकि शांकर वेदांत में प्रत्यक्ष की सीमाएँ हैं, क्योंकि यह अधूरा और अपूर्ण होता है।

इस प्रकार, न्याय और शांकर वेदांत में प्रत्यक्ष की अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन करने से हमें इन दोनों दर्शन शाखाओं के दृष्टिकोणों का अंतर समझने में मदद मिलती है।

#### संदर्भ सुचि

- [1] न्याय सूत्र (गौतम ऋषि द्वारा रचित)
- [2] न्याय भाष्य (वात्स्यायन द्वारा रचित)
- [3] न्याय वार्तिक (उद्योतकर द्वारा रचित)
- [4] न्याय मंजरी (जयंत भट्ट द्वारा रचित)
- [5] तर्क संग्रह (अन्नभट्ट द्वारा रचित)
- [6] ब्रह्म सूत्र (बादरायण द्वारा रचित)
- [7] ब्रह्म सूत्र भाष्य (आद्य शंकराचार्य द्वारा रचित)
- [8] वेदांत सूत्र (बादरायण द्वारा रचित)

- [9] वेदांत सार (सदानंद योगी द्वारा रचित)
- [10] अद्वैत सिद्धि (मधुसूदन सरस्वती द्वारा रचित)
- [11] न्याय और वेदांत का तुलनात्मक अध्ययन (डॉ. आर. एन. शर्मा द्वारा रचित)
- [12] अद्वैत वेदांत और न्याय का तुलनात्मक अध्ययन (डॉ. एस. के. मिश्र द्वारा रचित)
- [13] न्याय और अद्वैत वेदांत का तुलनात्मक अध्ययन (डॉ. पी. के. मिश्र द्वारा रचित)